"21 वी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यासों में तृतीयपंथी जीवन"

(यमदीप, तीसरी ताली, किन्नरकथा, गुलाममंडी, पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा के विशेष संदर्भ में)

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

मानव्य विद्या संकाय के अंतर्गत पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

: शोधकर्ता :

विजयकुमार प्रल्हाद वाघमारे

: शोधनिर्देशक :

डॉ.नामदेव गोविंदराव एमेकर

सहाय्यक प्राध्यापक, हिन्दी विभागाध्यक्ष

श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय, उदगीर

जि.लातूर

: अनुसंधान केंद्र :

दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

दिसम्बर २०१७

"21 वी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यासों में तृतीयपंथी जीवन"
(यमदीप, तीसरी ताली, किन्नरकथा, गुलाममंडी, पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा के विशेष संदर्भ में)

भूमिका :

हिंदी साहित्य अपने जन्म से लेकर वर्तमान समय तक अनेक विषयों को प्रवाहित करता रहा है। समसामायिकता को प्रस्तुत करना हिंदी साहित्य की विशेषता रही है। भारतीय साहित्य में हिंदी साहित्य का विषयगत फलक विस्तृत रहा है। भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी साहित्य की यह समृद्धि विशेष रही है। स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी साहित्य ने आधुनिकता, स्त्री-विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, मुस्लिम विमर्श आदि नई-नई विचारधाराओं को संपन्न बनाने में और समाधान खोजने में अपनी अहम भूमिका निभाई है। आज भी वह नये-नये विषयों को, आंदोलनो को शब्दबद्ध करता जा रहा है।

उपेक्षित जनसमुदायों को वाणी देना साहित्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। आज हिंदी साहित्य अनेक उपेक्षितों के पास पहुँच रहा है। ऐसा ही एक उपेक्षित समुदाय है तृतीयपंथी समाज। समाज में आज स्त्री और पुरुषों को महत्त्व मिल रहा है लेकिन एक तीसरा समाज तृतीयपंथी के रूप में पहचाना जाता है। उसको समाज में आज भी महत्त्व नहीं मिल रहा है। समाज और सरकार से यह समाज उपेक्षित है। आधार कार्ड में उनकी उपस्थिति दर्ज करने का निर्णय भारत सरकार ने अभी कुछ दिन पहले लिया है। अभी तक उनका अस्तित्व नहीं माना जाता था। इससे यह साबित होता है कि यह समाज कितना उपेक्षित है। समाज में और सरकारी दृष्टि में जिनका कोई अस्तित्त्व नहीं है ऐसे समाज पर हिंदी साहित्य ने अपनी दृष्टि ड़ाली है। उनके जीवन को लेकर अनेक उपन्यास लिखे गये हैं। उनके जीवन को समझना, उनकी समस्याओं से अवगत होना, उनकी समस्याओं को खोजना अनुसंधान का महत्त्वपूर्ण कार्य है।

भारतीय समाज में प्रमुख रूप से दो लिंग महत्त्वपूर्ण माने गये है किंतु इसके अलावा और एक लिंग है जिसे थर्ड जेंडर, तृतीयपंथी नाम से भी जाना जाता है। इन तृतीयपंथी लोगों को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक पीड़ा का सामना करना पड़ रहा है। फलस्वरूप वे यातनाओं का शिकार हो रहे हैं। हिंदी के प्रतिनिधिक उपन्यासों में 'यमदीप', 'तीसरी ताली', 'किन्नर कथा', 'गुलाममंडी', 'पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा' आदि उपन्यास तृतीयपंथी समाज जीवन का हाल बयान करते है। आज वर्तमान समय में तृतीयपंथी जीवन संवेदना से ज्यादा उपहास और तिरस्कार का विषय बन गया है। मजबूरन यह वर्ग अपने लिए स्वयं ही आवाज उठाने को बाध्य है। विशेषकर साहित्य में इस वर्ग विशेष को लेकर बहुत कम उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। इसलिए तृतीयपंथी जीवन पर आधारित उपन्यासों की गवेशना होनी चाहिए। ऐसा महसूस होने के कारण मैंने "21 वी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यासों में तृतीयपंथी जीवन (यमदीप, तीसरी ताली, किन्नरकथा, गुलाममंडी, पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा के विशेष संदर्भ में)" इस विषय का पीएच.डी. उपाधि हेतु शोधकार्य के लिए चयन किया है।

शोध कार्य का उद्देश्य (Objectives of Research):

मानव समाज दो स्तंभों पर खड़ा है-स्त्री और पुरुष। जिसमें दोनों के सहारे मानव प्रजाति आगे बढ़ रही है। मानव जाति की आदिम सभ्यता से ही समाज का संपूर्ण विकास इन्हीं दो लिंगों के कारण ही हो रहा है। लेकिन हमारे समाज में मानव प्रजाति के इन दो लिंगों के अतिरिक्त एक और लिंग का अस्तित्व है, जिसे हमारा समाज किन्नर, तृतीयपंथी, उभयलिंगी आदि नामों से संबोधित करता है। परिणामस्वरुप यह वर्ग उपहास का पात्र बन जाता है।

'21 वी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यासों में तृतीयपंथी जीवन' का विश्लेषण करना ही इस शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य रहेगा। तृतीयपंथी समाज यह साहित्य के प्रवाह से एक तरह से छुट गया है। जो वह अपमान, पीड़ा, शोषण, त्रासदी, अवहेलना का दिन-ब-दिन

सामना कर रहा है। जो वह अनुसंधान की धारा से भी अछुता रहा है। परिणामस्वरूप किन्नरों के जीवन का विश्लेषण करना तथा सामाजिक लिंगभेद की भावना को नष्ट करना इस शोध कार्य का प्रधान उद्देश्य है।

पूर्वमान्यताएँ (Hypothesis) :

तीसरी दुनिया की अभिव्यक्ति साहित्य में कम मात्रा में देखने को मिलती है। अर्थात् तृतीयपंथीय लोगों के जीवन को कुछ मात्रा में ही प्रस्तुत किया गया है। बीसवी शती के उत्तरार्द्ध और इक्कीसवी सदी के आरम्भ में हिंदी साहित्य जगत में स्त्री विमर्श और दलित विमर्श जैसे महत्त्वपूर्ण विमर्श उभरकर सामने आए। परिणामस्वरूप थर्ड जेंडर विमर्श का भी उद्‌भव हो गया। साहित्य में थर्ड जेंडर पर पहली बार महाभारत में 'शीखंडी' नामक पात्र का उल्लेख मिलता है। अर्जुन ने अपने अज्ञातवास का एक साल किन्नर का रूप धारण कर 'बृहन्नला' के नाम से बिताया था। कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' में किन्नरों का उल्लेख किया है। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार हिंदू और मुस्लिम शासकों द्वारा किन्नरों का इस्तेमाल खासतौर पर अंत:पुर और हरम में रानियों की पहरेदारी के लिए किया जाता था। अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में किन्नर वरिष्ठ अधिकारी रहे हैं।

अत: वर्तमान समय में नीरजा माधव, प्रदीप सौरभ, महेंद्र भीष्म, निर्मला भूराडिया तथा चित्रा मुद्‌गल जैसे लेखक तृतीयपंथी जीवन का यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत करते हैं।

शोध-कार्य का स्वरूप, व्याप्ति और मर्यादाएँ (Data, Scope & Limitations) :

थर्ड जेंडर, तृतीय लिंगी, उभयलिंगी, हिजड़ा, यूनक, शीखंडी जैसे कई नामों से संबोधित किया जानेवाला तृतीयपंथी समाज है। परिणामत: यह विषमता की भावना मिटाने का काम इक्कीसवी सदी के कुछ प्रमुख उपन्यास कर रहे हैं जिनमें 'यमदीप', 'किन्नरकथा', 'गुलाममंडी', 'तीसरी ताली', 'पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा' जैसे प्रमुख उपन्यास हैं।

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य को पूर्ण करने के लिए स्वरूप के तौर पर युगीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर कार्य किया जाएगा तथा समाज में लिंगभेद की विषमता मिटाकर समानता स्थापित करने का उद्देश्य इक्कीसवी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यासों के माध्यम से पूरा किया जाएगा। इस शोध कार्य में व्याप्ति के अंतर्गत 'यमदीप', 'तीसरी ताली', 'किन्नरकथा', 'गुलाममंडी', 'पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा' आदि उपन्यासों पर विस्तृत चर्चा की जाएगी। इसमें अभिव्यक्त 'इक्कीसवी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यासों में तृतीयपंथी जीवन' ही मेरे शोध कार्य का एकमात्र उद्देश्य रहेगा। इसके अतिरिक्त दूसरा विषय मेरे शोधकार्य की मर्यादा होगी। अतः उपन्यास पर ही दृष्टि ड़ाली जाएगी। अन्य विधाएँ तथा तत्त्व मेरे शोध कार्य का लक्ष्य नहीं होगा।

अनुसंधान पद्धतियाँ (Research Methods) :

शोधकर्ता को शोध कार्य पूर्ण करने के लिए अनुसंधान की विभिन्न पद्धतियों की सहायता लेना अत्यावश्यक है। तब जाकर ही शोध कार्य परिपूर्ण बनता है। तात्पर्य मुझे भी अनुसंधान की अनेक पद्धतियों को स्वीकार करना पड़ेगा। मेरे शोध कार्य में प्रश्नावली पद्धति, साक्षात्कार पद्धति, सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध कार्य को पूरा करने के लिए प्रश्नावली एवं साक्षात्कार पद्धति की सहायता ली जाएगी। साथ ही संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रंथ, विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ, समाचारपत्र, न्यूज आदि का उपयोग कर शोध कार्य किया जाएगा। तृतीयपंथी जीवन पर आधारित लिखे गये उपन्यास से संबंधित जानकारी रखनेवाले पाठक वर्ग की ओर से जानकारी ली जाएगी। इंटरनेट की सुविधा का उपयोग कर संबंधित विषय में जानकारी प्राप्त की जाएगी। अतः मैं प्रश्नावली के माध्यम से किन्नरों का साक्षात्कार लेने का प्रयास करुँगा।

अनुसंधान का महत्त्व (Importance of Research) :

दुनिया के सभी समाजों में किन्नारों का भी एक वर्ग है जिसे थर्ड जेंडर, तृतीयपंथी, उभयलिंगी जैसे कई नामों से जाना जाता है। आज हम भले ही विज्ञान एवं मशिनी युग में

जीवनयापन कर रहे हैं किंतु समाज के पीड़ित लोगों के प्रति उपहासात्मकता का व्यवहार करते हैं। जिसका किन्नर समाज भी अपवाद नहीं है। किन्नर समाज की स्थिति अत्यंत दयनीय है। उनकी झोली में अपार दु:ख है जिससे हमारा समाज कोसो दूर है।

हिंदी साहित्य में किन्नर समाज की अभिव्यक्ति अपरिपक्व रुप में है। समाज के वैचारिक लोग इन्हें स्वीकारने में हिचकिचा रहे हैं। हिंदी जगत में तृतीयपंथी जीवन से संबंधित पाँच उपन्यास हैं-'यमदीप', 'तीसरी ताली', 'किन्नरकथा', 'गुलाममंडी', 'पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा' आदि। इन उपन्यासों में तृतीयपंथी जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। कुल मिलाकर कहा जाए तो शिक्षा और संवेदनशीलता के माध्यम से किन्नर समुदाय समाज के मुख्य प्रवाह में आ जायेगा। तब लिंगरहित समाज की स्थापना हो सकती है। यही इस अनुसंधान का महत्त्व है।

अनुसंधान का प्रारूप (Tentative Chapterisation) :

'इक्कीसवी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यासों में तृतीयपंथी जीवन (यमदीप, तीसरी ताली, किन्नरकथा, गुलाममंडी, पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा के विशेष संदर्भ में)' इस शोध कार्य की भूमिका को स्पष्ट कर उसे सात अध्यायों में विभाजित किया जाएगा। अनुसंधान का यह प्रारूप निम्नलिखित रूप में स्पष्ट है-

प्रथम अध्याय - तृतीयपंथी : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

द्‌वितीय अध्याय - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास और तृतीयपंथी जीवन

तृतीय अध्याय - 21 वी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यास और उपन्यासकार

चतुर्थ अध्याय 21 वी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यासों का कथ्य

पंचम अध्याय - 21 वी सदी के प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में तृतीयपंथी जीवन

षष्ठम अध्याय - 21 वी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यास और तृतीयपंथी विमर्श

सप्तम अध्याय - मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

प्रथम अध्याय

तृतीयपंथी : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

प्रथम अध्याय में तृतीयपंथी अर्थात् थर्ड जेंडर का अर्थ स्पष्ट किया जायेगा और विभिन्न विद्वानों की तथा सामान्य परिभाषाओं का विश्लेषण किया जाएगा। इसके पश्चात थर्ड जेंडर अर्थात तृतीयपंथी समाज जीवन का स्वरूप विषद किया जायेगा।

द्‌वितीय अध्याय

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास और तृतीयपंथी जीवन

द्‌वितीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिंदी के समस्त उपन्यासों का अल्प परिचय दिया जाएगा तथा तृतीयपंथी जीवन से संबंधित हिंदी उपन्यासों की स्थिति को परखा जाएगा।

तृतीय अध्याय

21 वी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यास और उपन्यासकार

तृतीय अध्याय में इक्कीसवी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यासों का विस्तृत परिचय दिया जाएगा जिनमें नीरजा माधव 'यमदीप', प्रदीप सौरभ 'तीसरी ताली', महेंद्र भीष्म 'किन्नरकथा', निर्मला भुराडिया 'गुलाममंडी' और चित्रा मुद्‌गल 'पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा' आदि उपन्यासकार और उनके उपन्यासों का अध्ययन किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय

21 वी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यासों का कथ्य

चतुर्थ अध्याय में नीरजा माधव 'यमदीप', प्रदीप सौरभ 'तीसरी ताली', महेंद्र भीष्म 'किन्नरकथा', निर्मला भुराडिया 'गुलाममंडी' और चित्रा मुद्‌गल 'पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा' आदि की समीक्षात्मक कथावस्तु प्रस्तुत की जाएगी।

पंचम अध्याय

21 वी सदी के प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में तृतीयपंथी जीवन

पंचम अध्याय में तृतीयपंथी जीवन पर आधारित 'यमदीप', 'तीसरी ताली', 'किन्नरकथा', 'गुलाममंडी', 'पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा' इन पाँच प्रमुख उपन्यासों का विवेचन किया जायेगा। यह विवेचन प्रमुखत: निम्नांकित दृष्टि से किया जायेगा-

(1) सामाजिक जीवन

(2) शैक्षिक जीवन

(3) आर्थिक जीवन

(4) धार्मिक जीवन

(5) राजकीय जीवन

(6) सांस्कृतिक जीवन

षष्ठम अध्याय

21 वी सदी के प्रतिनिधि हिंदी उपन्यास और तृतीयपंथी विमर्श

षष्ठम अध्याय में यमदीप, तीसरी ताली, किन्नरकथा, गुलाममंडी, पोस्ट बॉक्स नं.203 नालासोपारा में चित्रित तृतीयपंथी जीवन और विमर्श को लेकर अनुसंधानात्मक विचार प्रस्तुत किया जायेगा'

सप्तम अध्याय

मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

सप्तम अध्याय में संपूर्ण शोध कार्य का मूल्यांकन कर वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष प्रस्तुत किये जाएँगे। अंत में परिशिष्ट के अंतर्गत संदर्भ ग्रंथ सूची दी जाएगी।

शोध-निर्देशक	***शोधकर्ता***
डॉ.नामदेव गोविंदराव एमेकर	**वाघमारे विजयकुमार प्रल्हाद**